मलिक मुहम्मद जायसी

प्रश्न- मलिक मुहम्मद जायसी का संक्षिप्त जीवन वृत्त देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का परिचय दें।

उत्तर-

सूफी प्रेममार्गी महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म 900 हिजरी संवत, सन 1496 ई० में उत्तर प्रदेश के राय बरेली के अन्तर्गत जायस नगर के कंचाना मुहल्ले में हुआ था। स्वयं जायसी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक आखिरी कलाम और पद्मावत में अपने जन्म स्थान की चर्चा की है। आखिरी कलाम में उन्होंने कहा है— "जायसी ना जायस नगर और स्थान तथा पद्मावत में उन्होंने इस तरह लिखा है— "जायस नगर धरम अस्थानू"

जन्मभूमि जायस ही जायसी का जन्म स्थान है अथवा नहीं इस बात को लेकर विद्वानों में मतभेद है। डॉ० ग्रियर्सन, डा० रामरतन भटनागर जैसे विद्वान जायस को जायसी की जन्मभूमि मानते हैं। परन्तु डॉ० विमल कुमार जैन तथा अन्य कुछ विद्वानों ने जायस को ही उनका जन्म स्थान कहा है।

जायसी के वंशज संभवतः अरब जाति के थे। सैयद कल्ब मुस्तफा ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'मलिक मुहम्मद जायसी' में जायसी के पिता का नाम शेख मुमरेज लिखा है। जायसी के नाना का नाम शेख अलहदाद खिरवा था जो मानिकपुर के निवासी थे। बचपन में शीतला के प्रकोप से एक सूफी फकीर शाह मुबारक की मनौती से उनकी जान तो बच गई लेकिन एक आँख जाती रही तथा श्रवणशक्ति भी नष्ट हो गई। इनके बाएँ अद्धांग में लकवा भी हो गया जिसकी चर्चा स्वयं जायसी ने इन शब्दों में की—

मुहम्मद बाँयी दिसि तजा
एक श्रवण एक आँख।

जायसी के माता पिता निर्धन थे परन्तु बचपन से ही साधुओं पीरों और फकीरों के वचनों के प्रति जायसी बड़े अनुरक्त थे। जब अल्पावस्था में ही इनके माँ बाप चल बसे तो

Scanned with CamScanner

अन्य सामाजी बहुत दिनों तक इधर उधर भटकते रहे और इनका परिचय फकीरों से हुआ तथा इनकी आध्यात्मिक रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती गई। इन्होंने सूफी फकीर शेख मुबारक शाह बोदले को अपना गुरु बनाया। इनके एक दूसरे गुरु भी थे जिनका नाम शेख मोहिउद्दीन था। इस तरह जायसी के दो गुरु बताए जाते हैं।

जायसी अमेठी नरेश के बहुत दिनों तक राजाश्रित रहे। इनकी मृत्यु अमेठी में ही हुई थी। इनकी मृत्यु की जो उपलब्ध तिथि है तदनुसार 1542 ई० के लगभग हुई। आचार्य शुक्ल के ही जायसी एक सहृदय कवि और आध्यात्मिक प्रेम रखने वाले सूफी कवि थे।

यों तो जायसी के अनेक ग्रन्थ बताए जाते हैं लेकिन उनमें तीन प्रमुख और प्रामाणिक हैं — पदमावत, अखरावट और आखिरी कलाम। पदमावत तो सूफी काव्य धारा का एक प्रसिद्ध महाकाव्य ही है। अखरावट में ईश्वर जीव आदि से सम्बद्ध सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है तथा आखिरी कलाम में कयामत का वर्णन मिलता है।

जायसी की प्रसिद्धि मुख्यतः पदमावत को लेकर है। इसमें कवि ने इतिहास और कल्पना का ऐसा मणिकांचन संयोग किया है जिसके माध्यम से लौकिक प्रेमाख्यान के अन्तर्गत अलौकिक और आध्यात्मिक प्रेम की झाँकी मिलती है। जायसी के पूर्व निर्गुण संत कवि कबीर ने अपनी खरी फटकार से हिन्दू और मुस्लिम सम्प्रदायों की बुराइयों पर प्रहार करते रहे जो मुख्यतः चिढ़ाने वाला था। परन्तु जायसी ने अपने प्रेम काव्य में मनुष्यता और मनुष्यता के बीच रागात्मक सम्बंध को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। उनका यह प्रयास हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों को समान रूप से भाया। उन्होंने हिन्दुओं के घरों में प्रचलित प्रेम कहानियों को आधार बनाकर जिस आध्यात्मिक

रूपक को हमारे सामने रखा। उसमें प्रेम के बीच
का आध्यात्मिक स्वरूप मिलता है।

जायसी रचित पद्मावत में महाकवि
जायसी ने भारत की मसनवी शैली में चित्तौड़ के
राजा रतनसिंह और सिंहल द्वीप की राजकुमारी
पद्मावती के प्रेम और विरह प्रसंगों को लिया
है। परन्तु इस कथा का अन्त तो एक आध्यात्मिक
रूपक ही माना गया है। रतनसेन जीवात्मा
है जो परम तत्व पद्मावत को प्राप्त करने के
लिए निकला है। वैसे इस कथा को कवि ने
लौकिक धरातल पर संक्षेप में इस प्रकार
प्रस्तुत किया है — सिंहल द्वीप के राजा
गंधर्व सेन की कन्या पद्मावती अपने रूप
सौन्दर्य के लिए विख्यात थी। उसके पास एक
हीरामन नाम का तोता था। बहुत प्रयत्न करने
पर भी पद्मावती के योग्य कोई वर नहीं
मिल रहा था। पद्मावती के पिता इस बात से
चिंतित था। एक दिन हीरामन तोता
पद्मावती से जब उसके वर न मिलने के
बारे में कह रहा था इसी बीच तोते की बात
गन्धर्वसेन ने सुन लिया और वे उस पर
बहुत क्रोधित हुए। तोता भी राजा के डर
से उड़कर एक दिन पिंजड़े से उड़ गया।
बेचारी पद्मावती उसके वियोग में रोती रही।
हीरामन तोता उड़ते-उड़ते एक
बहेलिये का हाथ लग गया और उस
बहेलिये ने उसे एक ब्राह्मण के हाथ बेच
दिया। उस ब्राह्मण से चित्तौड़ गढ़ के राजा
रतनसेन ने उस तोते को खरीद लिया।
और उसे अपने पास रखने लगा। उसकी
पत्नी नागमती को अपने रूप सौन्दर्य
पर बहुत गर्व था। एक दिन मन की मौज में
आकर नागमती ने तोते से यह प्रश्न किया
कि मेरे समान सुन्दरी इस संसार में कहाँ
मिलेगी। तोते को बड़ी खीज हुई। उसने
सिंहल गढ़ के राजा गन्धर्व सेन की पुत्री

पदमावती का नाम लिया और रानी को नीचा दि
के उत्तर देने से उसने इनकार कर दिया।
पदमावती के रूप सौन्दर्य के सामने सर्वथा
नगण्य है। दोनों की सुन्दरता में ज़मीन
और आसमान का अंतर है। हीरामन
तोते की बात सुनकर नागमती अत्यंत क्रोधित
हुई और उसने अपनी चेरी को आज्ञा दी कि
वह उस तोते को मार डाले। चेरी को हीरामन
तोते पर दया आयी और उसे मार डालने
के बजाय उसे छिपा दिया। रतनसेन जब
लौटा तो उसने हीरामन तोते को नहीं देखा
उसे बड़ी बेचैनी हुई। चेरी ने तब उसे
छिपे तोते को बाहर निकाला। एक दिन तोते ने
नागमती की सारी बातें राजा से कह दी यह भी
बताया कि नागमती से कहीं अधिक सुन्दर गन्धर्व
सेन की पुत्री पदमावती है। तोते के मुख से
पदमावती के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर राजा
उसे प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो उठा। उसने
सोलह सहस्र योगियों को भी अपने साथ
ले लिया और बड़े जहाज पर सवार होकर
कलिंग से सिंहलगढ़ की ओर रवाना हुआ।
हीरामन तोता उसे आगे आगे मार्ग दिखाता
जा रहा था। कुछ दिनों के बाद सभी सिंहल
गढ़ पहुँचे। राजा कुछ योगियों को लेकर
शिव मंदिर में पूजा करने लगा। उसी समय
पदमावती भी हीरामन तोता के निर्देशानु
सार पूजा करने के लिए आयी। परन्तु रतनसेन
पदमावती को देखते ही मूर्छित हो गया
वह उसे पूरी तरह देख नहीं पाया। पदमाव
ती तो पूजा करने के बाद शीघ्र राजमहल
लौट गयी। रतनसेन के [illegible] मालूम होने
पर उसने यह कहा कि अब तो राजा
रतनसेन को सिंहल गढ़ पर चढ़ाई करनी
होगी तभी मैं मिल सकूँगी। रतनसेन के साथ
सोलह सहस्र योगी तो थे ही साथ ही शिवजी
और हनुमान की सहायता से सिंहलगढ़ में

को चारों ओर से घेर लिया। गन्धर्वसेन के सिवा
सिंहलों के साथ इसका भीषण युद्ध हुआ। लेकिन
युद्ध में ही गन्धर्वसेन ने भगवान शिव को
देख लिया वह उनके पैरों पर गिर गया।
और उनसे कहा कि पद्मावती आप की है।
आप जिसे चाहें दे दें। भगवान शिव के
आज्ञा से पद्मावती रतनसेन को मिल गयी
उसने उसके साथ विवाह किया। कुछ दिन
पद्मावती के सिंहलगढ़ में ही रहा।
तत्पश्चात वे दोनों रानियों के
साथ चित्तौड़ लौट आए। चित्तौड़ के राजा रतनसेन
के दरबार में राघव चेतन नाम का एक ब्राह्मण
ज्योतिषी था जिसे यक्षिणी सिद्ध थी।
एक दिन राजा के भरे दरबार में उसने यक्षिणी
की सहायता से प्रतिपदा को ही दूज का चाँद
दिखला दिया। जब राजा को उसकी सच्चाई
बातें मालूम हुई तो उसने राघव चेतन को
अपने देश से निकाल दिया। राघव चेतन के
मन में राजा के प्रति ~~विद्रोह~~ विद्वेष की आग
जल उठी। उस समय दिल्ली का बादशाह
अलाउद्दीन था। राघव चेतन ने अलाउद्दीन
के दरबार में पद्मावती के रूप सौन्दर्य की
बड़ी भूरि-भूरि प्रशंसा की और प्रकारान्तर से
उसने राजा रतनसिंह के विरुद्ध अलाउद्दीन
को पद्मावती को प्राप्त करने के
लिए भड़काया। अलाउद्दीन की सेना ने बहुत
उद्देश्य से अलाउद्दीन की सेना ने
दिनों तक चित्तौड़गढ़ को घेर रखा। कुछ
दिनों के बाद राजा रतनसेन और अलाउ
द्दीन के बीच संधि हुई और उस संधि
प्रस्ताव के अनुसार अलाउद्दीन राजा के
मिलने के उद्देश्य से राजमहल में आया
राजमहल में ही उसने एक दर्पण में
पद्मावती के रूप सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब को
देख लिया और वह कुछ समय के लिए मूर्छित
हो गया। वापस लौटने पर राजा रतनसेन
के साथ-साथ अलाउद्दीन महल के बाहर

तक गया और मलिक के पास दिल्ली अलाउद्दीन के सिपाहियों ने राजा को पकड़ लिया। इस तरह राजा रतनसेन किस प्रकार धोखे से अलाउद्दीन के कैद रखाने को आ गया।

राजा रतनसेन के पकड़े जाने पर पद्मावती अत्यंत व्याकुल हुई उसने गोरा और बादल नामक दो वीर पुरुषों की सहायता ली। 1600 पालकियों में सशस्त्र सैनिक सवार हुए। पालकियों अलाउद्दीन के महल के सामने रखी। गोरा बादल ने अलाउद्दीन को खबर करवाई कि रानी पद्मावती अपने पति से मिलकर आपके हृदय में प्रवेश करेंगी। अलाउद्दीन के आज्ञा से एक ढकी हुई पालकी राजा रतनसेन के कोठरी के सामने पहुँची उसमें से एक लुहार ने बाहर निकलकर राजा की बेड़ियाँ काट दी पहले ही से तैयार एक घोड़े पर सवार होकर रतनसेन को भगा निकला। इधर गोरा तो अलाउद्दीन के सैनिकों को रोकने में लगा रहा और उधर राजा बादल के साथ चित्तौड़ पहुँच गया। चित्तौड़ गढ़ पहुँचने पर रानी पद्मावती ने कुम्भलनेर के राजा देवपाल द्वारा पद्मावती के पास दूती भेजने की बात कही राजा रतनसेन अत्यंत क्रोधित हुआ और उसने तुरंत राजा देवपाल पर आक्रमण कर दिया। राजा रतनसेन ने देवपाल का सिर काट लिया लेकिन इस युद्ध में रतनसेन भी मारे गये।

राजा रतनसेन की मृत्यु की समाचार पाकर उनकी दोनों रानियाँ नागमती और पद्मावती बहुत दुःखी हुई। राजा का शव चित्तौड़ लाया गया। उनकी चिता सजाई गई और उनकी दोनों रानियाँ नागमती और पद्मावती हँसते-हँसते प्रज्वलित चिता में प्रवेश कर गयीं। अलाउद्दीन

Scanned with CamScanner

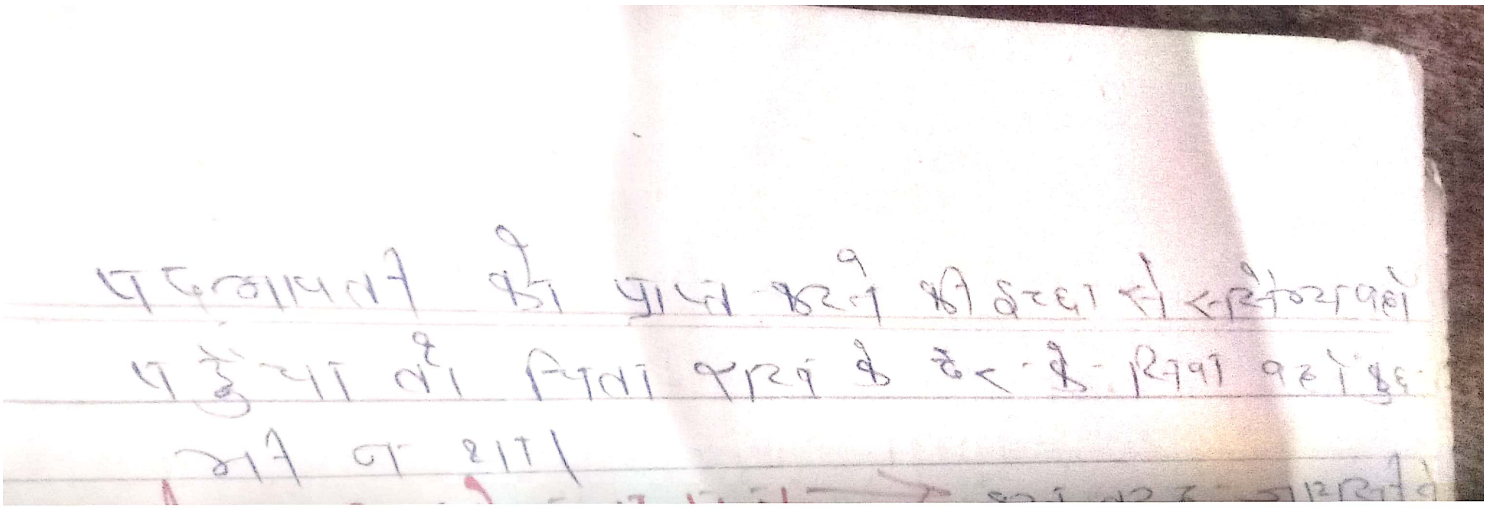

पद्मावती को प्राप्त करने की इच्छा से रत्नसेन यहाँ पहुँचा था। चिता चढ़ने के [illegible] के सिवा कोई [illegible] और न था।